शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026
Page No- 116-118
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :
शिवी सिंह
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज.

Corresponding Author :
शिवी सिंह
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज.

हिंदी एकांकी के जनक के रूप में डॉ. रामकुमार वर्मा का ऐतिहासिक योगदान

शोध सार : हिंदी नाट्य परंपरा के विकास क्रम में एकांकी विधा का उद्भव आधुनिक युग की सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक आवश्यकताओं के परिणामस्वरूप हुआ, जिसमें संक्षिप्तता, प्रभाव-शीलता और नाटकीयता प्रमुख तत्व हैं। डॉ. रामकुमार वर्मा ने इस विधा को न केवल सुदृढ़ आधार प्रदान किया, बल्कि उसे एक स्वतंत्र और प्रतिष्ठित साहित्यिक रूप में स्थापित किया। उनकी एकांकियों में कथानक की एकता, संवादों की सजीवता, मनोवैज्ञानिक गहराई तथा विषय-विविधता का उत्कृष्ट समन्वय देखने को मिलता है। "बादल की मृत्यु", "पृथ्वीराज की आँखें" और "दीपदान" जैसी एकांकियों के माध्यम से उन्होंने ऐतिहासिक चेतना, सामाजिक यथार्थ और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। यह शोध आलेख हिंदी एकांकी के जनक के रूप में डॉ. रामकुमार वर्मा के ऐतिहासिक योगदान का सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही उनके एकांकियों की शिल्पगत विशेषताओं, मंचीयता, भाषा-शैली तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण का भी विवेचन किया गया है।

बीज शब्द : एकांकी, नाट्य परंपरा, ऐतिहासिक योगदान, मंचीयता, संवाद, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, सामाजिक चेतना, नाट्य शिल्प।

मूल आलेख : हिंदी साहित्य की नाट्य परंपरा अत्यंत समृद्ध, प्राचीन और बहुआयामी रही है। संस्कृत नाटकों की गौरवशाली परंपरा से लेकर आधुनिक हिंदी रंगमंच तक एक सशक्त विकास-धारा निरंतर प्रवाहित होती रही है, जिसने भारतीय समाज के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, नैतिक और मनोवैज्ञानिक पक्षों को अभिव्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का यह कथन कि "साहित्य समाज का दर्पण है" नाटक विधा पर विशेष रूप से लागू होता है, क्योंकि नाटक में जीवन की गतिशीलता, संवादात्मकता और दृश्यात्मकता के माध्यम से समाज का यथार्थ अत्यंत सजीव रूप में सामने आता है।

आधुनिक युग में औद्योगीकरण, शहरीकरण और जीवन की तीव्र गति ने मनुष्य को समयाभाव से ग्रस्त कर दिया। परिणामस्वरूप

साहित्य की विधाओं में भी संक्षिप्तता, तीव्रता और प्रभावशीलता की मांग बढ़ी। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए 'एकांकी' विधा का विकास हुआ, जो सीमित आकार में भी गहन अनुभूतियों, विचारों और जीवन-दृष्टि को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने में सक्षम है। एकांकी नाटक की परिभाषा देते हुए डॉ. रामकुमार वर्मा ने कहा है कि "एकांकी में एक ही घटना होती है और वह नाटकीय कौशल से कौतूहल का संचय करती हुई चरम सीमा तक पहुँचती है।" इस परिभाषा से स्पष्ट है कि एकांकी में कथानक की एकता, समय और स्थान की सीमितता तथा संवादों की सघनता अत्यंत आवश्यक होती है।

हिंदी नाट्य परंपरा का आधुनिक स्वरूप भारतेंदु हरिश्चंद्र से प्रारंभ होता है। भारतेंदु ने नाटक को राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना से जोड़ा, किंतु उनके नाटक अपेक्षाकृत विस्तृत थे और उनमें एकांकी की संक्षिप्तता का अभाव था। द्विवेदी युग में भी नाट्य-रचना हुई, परंतु एकांकी के रूप में स्वतंत्र और सुसंगठित विधा का विकास नहीं हो सका। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में पश्चिमी साहित्य के प्रभाव से हिंदी साहित्य में नए प्रयोगों का प्रवेश हुआ। इसी समय डॉ. रामकुमार वर्मा का आगमन हुआ, जिन्होंने हिंदी एकांकी को न केवल सुदृढ़ आधार प्रदान किया, बल्कि उसे एक स्वतंत्र, प्रतिष्ठित और परिपक्व साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित किया।

डॉ. रामकुमार वर्मा का साहित्यिक व्यक्तित्व अत्यंत बहुआयामी था। वे नाटककार, कवि, आलोचक इत्यादि सभी रूपों में प्रतिष्ठित थे, किंतु उनकी ख्याति विशेष रूप से एकांकी नाटककार के रूप में हुई। सन् 1930 में रचित "बादल की मृत्यु" उनका प्रथम एकांकी है, जो अपनी कल्पनात्मकता (फैंटेसी) और प्रतीकात्मकता के कारण अत्यंत लोकप्रिय हुआ। इस रचना के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि एकांकी केवल संक्षिप्त नाटक नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र और सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम है।

डॉ. वर्मा को हिंदी एकांकी का जनक कहे जाने का प्रमुख कारण यह है कि उन्होंने इस विधा को सुव्यवस्थित शिल्प प्रदान किया। उनसे पूर्व एकांकी जैसी रचनाएँ अवश्य थीं, किंतु उनमें कथानक की सघनता, शिल्पगत कसावट और नाटकीय प्रभाव का वह संतुलन नहीं था, जो वर्मा जी के एकांकियों में देखने को मिलता है। उन्होंने कथानक को एक केंद्रीय बिंदु पर केंद्रित करते हुए उसे संक्षिप्त, सुसंगठित और प्रभावपूर्ण बनाया। उनके यहाँ अनावश्यक प्रसंगों का अभाव है और प्रत्येक घटना कथा की प्रगति में सहायक होती है। उनके एकांकियों की सबसे बड़ी विशेषता उनके संवाद हैं। उनके संवाद स्वाभाविक, सजीव और प्रभावशाली होते हैं, जो पात्रों के मनोभावों और आंतरिक संघर्षों को उजागर करते हैं। नाटक का प्राण संवाद को माना जाता है, और इस दृष्टि से वर्मा जी के एकांकी अत्यंत सफल हैं। उन्होंने संवादों के माध्यम से पात्रों के मनोविज्ञान को इतनी कुशलता से प्रस्तुत किया है कि दर्शक उनके साथ आत्मीयता का अनुभव करता है।

डॉ. वर्मा के एकांकियों की विषय-विविधता भी उल्लेखनीय है। उन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और नैतिक सभी प्रकार के विषयों को अपने एकांकियों में स्थान दिया। उनके प्रसिद्ध एकांकियों में "बादल की मृत्यु", "पृथ्वीराज की आँखें", "दीपदान" आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

"पृथ्वीराज की आँखें" एक ऐतिहासिक एकांकी है, जिसमें वीरता, त्याग और राष्ट्रीय गौरव का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। इस एकांकी के माध्यम से वर्मा जी ने अतीत की गौरवगाथा को वर्तमान से जोड़ने का प्रयास किया है। यह रचना केवल ऐतिहासिक घटना का चित्रण नहीं है, बल्कि उसमें राष्ट्रीय चेतना का सशक्त स्वर भी विद्यमान है। इस प्रकार उनके ऐतिहासिक एकांकी अतीत और वर्तमान के बीच एक जीवंत सेतु का कार्य करते हैं।

"दीपदान" में भारतीय संस्कृति और परंपराओं का प्रतीकात्मक चित्रण मिलता है। इसमें त्याग, आस्था और मानवीय मूल्यों का सुंदर समन्वय है। इस प्रकार वर्मा जी के एकांकियों में केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन और नैतिक चेतना का भी समावेश है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी उनके एकांकी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने पात्रों के बाह्य व्यवहार के साथ-साथ उनके अंतर्मन की जटिलताओं को भी उजागर किया है। उनके पात्र

केवल घटनाओं के वाहक नहीं, बल्कि संवेदनशील और जटिल व्यक्तित्व के प्रतिनिधि हैं। इस कारण उनके एकांकी अधिक यथार्थवादी और प्रभावशाली बन जाते हैं।

डॉ. वर्मा के एकांकियों की भाषा अत्यंत सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण है। उन्होंने भाषा को अत्यधिक अलंकारिक या जटिल न बनाकर उसे संवादात्मक और प्रभावी बनाए रखा है। उनकी भाषा में साहित्यिकता और नाटकीयता का संतुलन देखने को मिलता है, जिससे उनके एकांकी पाठ्य और मंचीय—दोनों रूपों में सफल सिद्ध होते हैं। मंचीय दृष्टि से भी उनके एकांकी अत्यंत सफल हैं। सीमित पात्र, संक्षिप्त कथानक और प्रभावशाली संवादों के कारण उनके एकांकी आसानी से मंचित किए जा सकते हैं। यही कारण है कि वे विद्यालयों, महाविद्यालयों और विभिन्न सांस्कृतिक मंचों पर अत्यधिक लोकप्रिय हुए। उन्होंने हिंदी रंगमंच को सरल, सुलभ और प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

डॉ. वर्मा के योगदान के परिणामस्वरूप हिंदी एकांकी लेखन की एक सशक्त परंपरा विकसित हुई। उनके बाद अनेक साहित्यकार इस विधा की ओर आकर्षित हुए और हिंदी एकांकी साहित्य का व्यापक विकास हुआ। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल का यह कथन इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है कि "हिंदी एकांकी का वास्तविक विकास डॉ. रामकुमार वर्मा के प्रयासों का परिणाम है।"

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो भारतेंदु हरिश्चंद्र और जयशंकर प्रसाद जैसे नाटककारों ने हिंदी नाटक को दिशा दी, किंतु एकांकी विधा को सुव्यवस्थित रूप देने का श्रेय डॉ. वर्मा को ही प्राप्त है। उन्होंने नाटक को संक्षिप्तता और तीव्रता प्रदान करते हुए उसे आधुनिक युग के अनुकूल बनाया। हालाँकि कुछ आलोचकों ने उनके एकांकियों में उपदेशात्मकता और भावुकता की अधिकता की ओर संकेत किया है। कभी-कभी उनके पात्र आदर्शवादी प्रतीत होते हैं, जिससे यथार्थ की कठोरता कम हो जाती है। फिर भी यह आलोचनाएँ उनके समग्र योगदान को कम नहीं कर सकतीं। उनका योगदान हिंदी एकांकी के विकास में आधारभूत और ऐतिहासिक है।

डॉ. वर्मा ने न केवल एक नई विधा को जन्म दिया, बल्कि उसे परिपक्वता, गहराई और व्यापकता भी प्रदान की। उनकी रचनाओं में नाटकीयता, मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता, सामाजिक चेतना और ऐतिहासिक दृष्टि का अद्भुत समन्वय मिलता है। उन्होंने एकांकी को केवल साहित्यिक विधा नहीं, बल्कि समाज और जीवन के गहन विश्लेषण का माध्यम बना दिया।

निष्कर्ष : अंततः यह कहा जा सकता है कि डॉ. रामकुमार वर्मा हिंदी एकांकी के क्षेत्र में एक युग-प्रवर्तक साहित्यकार हैं। उन्होंने इस विधा को जन्म देकर उसे प्रतिष्ठा और व्यापकता प्रदान की। उनकी एकांकियों में जीवन की विविधता, भावनाओं की गहराई और विचारों की गंभीरता का जो समन्वय मिलता है, वह हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है। यही कारण है कि उन्हें "हिंदी एकांकी का जनक" कहा जाता है। उनका योगदान न केवल ऐतिहासिक है, बल्कि आज भी प्रेरणास्रोत के रूप में प्रासंगिक बना हुआ है।

संदर्भ सूची :

1. शुक्ल, रामचंद्र — हिंदी साहित्य का इतिहास, वाराणसी, नागरी प्रचारिणी सभा
2. चतुर्वेदी, रामस्वरुप — हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन
3. सं. नगेंद्र, डॉ., हरदयाल डॉ. — हिंदी साहित्य का इतिहास, मयूर प्रकाशन
4. ओझा, दशरथ- हिंदी नाटक ; उद्भव और विकास, नई दिल्ली, राजपाल एंड सन्स
5. सिंह, बच्चन — हिंदी नाटक, नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन
6. डॉ. झा, ऐश्वर्या, हिंदी नाटक एवं एकांकी, नटराज प्रकाशन
7. वर्मा, रामकुमार — एकांकी (विभिन्न संकलन)

•